सेनगोल और रामानाद साम्राज्य

- **चर्चा में क्यों :–** हाल ही में हाल ही में समाजवादी पार्टी के एक सांसद के द्वारा लोकसभा में स्थापित ऐतिहासिक राजदंड ‘सेनगोल’ को हटाने की बात कही है

- **हटाए जाने का आधार :–** यह राजतंत्र के प्रतीक चिन्ह के तौर पर प्रयोग किया जाता था और वर्तमान में भी राजतंत्र की याद दिलाता है।

- **कब स्थापित हुआ था :–** पिछले वर्ष 28 मई को नए संसद भवन के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा।

क्या है सेनगोल :–

- ‘सेनगोल’ को तमिल शब्द ‘सेम्माई’ से लिया गया है
- अर्थ :– ‘धार्मिकता’ है।
- ‘सेनगोल’ या चेन्कोल को तत्कालीन मद्रास (वर्तमान में चेन्नई) के जौहरी बुम्मिडी बंगारू चेट्टी के द्वारा तैयार किया गया था।
- ‘सेनगोल’ सोने की परत चढ़ा हुआ एक हस्त निर्मित राज दंड है जिसकी ऊंचाई लगभग 5 फीट है।
- ‘सेनगोल’ का ऊपरी व्यास लगभग 3 इंच और नीचे का व्यास लगभग 1 इंच है जिसके शीर्ष पर भगवान शिव का पवित्र बैल नंदी का चित्र है।

- यह एक लकड़ी के डंडे में किए गए कलाकृति के रूप में है।

ऐतिहासिक महत्व –

- उसका संबंध मदुरै राजवंश से है।
- राजतंत्र के समय शाही राजदंड शक्ति का प्रतीक माना जाता था।
- इसके अलावा इसे धार्मिकता, न्याय और अधिकार के प्रतीक के रूप में भी जाना जाता था।
- प्राचीन समय के 'सेनगोल' को महत्वपूर्ण अवसरों पर मदुरै मंदिर के देवी मीनाक्षी के सामने रखा जाता था।

- ‘सेनगोल’ को एक ‘दैवीय प्रतीक’ माना जाता तथा राजा के सिंहासन कक्ष में रखा जाता ।
- यह राजा की भूमिका का भी प्रतिनिधित्व करता।
- ऐसा माना जाता है कि 17 वीं शताब्दी के दौरान रामनाद के सेतुपतियों ने जब पहली बार राजा का दर्जा प्राप्त किया तो उन्हें यह ‘सेनगोल’ रामेश्वरम मंदिर के पुजारियों द्वारा एक अनुष्ठानिक प्रतीक के रूप में दिया गया।
- अतः ‘सेनगोल’ को इसके ऐतिहासिक सन्दर्भ के अनुसार ‘धार्मिक राजत्व’ के प्रतीक के रूप में वर्णित किया गया।

आधिकारिक दस्तावेज के अनुसार 'सेनगोल' –

- गृहमंत्री अमित शाह ने 'सेनगोल' को ब्रिटिश से भारतीयों को सत्ता के हस्तांतरण के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रतीक बताया।
- आधिकारिक दस्तावेज की अनुसार अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने जब सत्ता भारत को हस्तांतरित की इसके लिए एक भव्य समारोह का आयोजन करने की पेशकश की।
- इसी समय सी राजगोपालाचारी ने भारत के प्रधानमंत्री बनने वाले जवाहरलाल नेहरू को सत्ता हस्तांतरण समारोह के रूप में "चोल राजवंश की परंपरा" का पालन करने का सुझाव दिया।

- चोल राजवंश के दौरान सत्ता हस्तांतरण के लिए राजा द्वारा उसके उत्तराधिकारी को 'सेनगोल' सौंपकर नवनियुक्त शासक को अपनी प्रजा पर 'निष्पक्ष और न्यायपूर्ण' शासन करने का आदेश दिया जाता था।

- आधिकारिक दस्तावेज के अनुसार सी राजगोपालाचारी को यह राजदंड तमिलनाडु के तंजौर जिले से 'तिरुवदुथुराई एथेनम' मठ से प्राप्त हुआ।

- जिसके बाद इस 'सेनगोल' को पुनः सुसज्जित करने का काम जौहरी बुमिडी बंगारू चेट्टी को दिया गया।

- 14 अगस्त 1947 को दिल्ली में आयोजित सत्ता हस्तांतरण समारोह के दौरान तमिलनाडु से अधीनम (पुजारियों) ने तंजौर नदी के पवित्र जल को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू पर छिड़ककर उनके हाथों में 'सेनगोल राजदंड' सौंपा जिसे प्रधानमंत्री ने स्वीकार किया।

क्या सत्ता हस्तांतरण समारोह आधिकारिक रूप में दर्ज है?

- भारतीय संस्कृति मंत्रालय के आधिकारिक बयान के अनुसार 'टाइम पत्रिका' की 25 अगस्त 1947 की अंक में इस समारोह का जिक्र किया गया था।

- किंतु संस्कृति मंत्रालय के अनुसार :– तत्कालीन समय में देश विभाजन के कारण हुए सांप्रदायिक हिंसा हो रही थी जिस कारण इस औपचारिक का आदेश जारी नहीं किया गया था।

- जिससे इसका कोई रिकॉर्ड प्राप्त नहीं होता।

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सेतुपति –

- सेतुपति मुख्य रूप से तमिलनाडु के रामनाथपुर और शिवगंगा जिले के मारवार समुदाय के मूल निवासी तमिल कबीले के रूप में जाना जाता है।

- 5 वीं शताब्दी के दौरान मारवार वंश रामनाथस्वामी मंदिर के संरक्षक के रूप में थे जिन्हें 'सेतु' कहा जाता था, जिसके बाद इनके द्वारा सेतुपति की उपाधि धारण की गई।

- 17 वीं शताब्दी के आरम्भ में मुथुकृष्णप्पा नायक ने सेतुपति की प्राचीन वंशावली को पुनर्स्थापित किया। जिसका मुख्यालय 'रामनाद' था।

- 1702 ई में रघुनाथ किलावन ने खुद को स्वतंत्र राजा के रूप में रामनाद का राजा घोषित किया।

- 1708 तक रघुनाथ किलावन ने रामनाद को शक्तिशाली रामनाद साम्राज्य में बदल दिया जो मारवार साम्राज्य के रूप में जाना जाता है।

- 1790 के ब्रिटिश राज्य के दौरान रामनाद के राजा को हटा दिया गया एवं तत्कालीन रामनाद साम्राज्य के राजा की बहन मंगलेश्वरी नचियार रामनाद का शासक बना दिया गया।

- वर्ष 1803 में अंग्रेजों द्वारा रामनाद को जागीर देकर राज्य को जमींदारी में बदल दिया।

- तब से लेकर भारत की आजादी तक रामनाद पर रानी और उसके वंशजों का शासन रहा।

- वर्ष 1947 में भारत की आजादी के बाद भारत सरकार ने सभी जागीरें, रियासतों और संपत्तियों को भारत संघ में विलय कर दिया जिसके कारण 1949 में सभी शासकों ने अपने शासकीय अधिकार खो दिए।

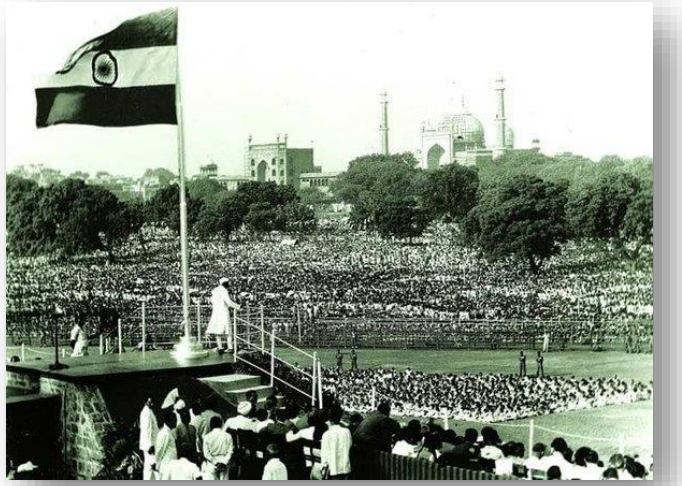

- वर्ष 1971 में इन शासकों को दिया जाने वाला भत्ता 'प्रिवी पर्स' भी समाप्त कर दिया गया जिसके बाद रामनाद साम्राज्य के सभी अधिकार समाप्त हो गए।

रामनाथस्वामी मंदिर –

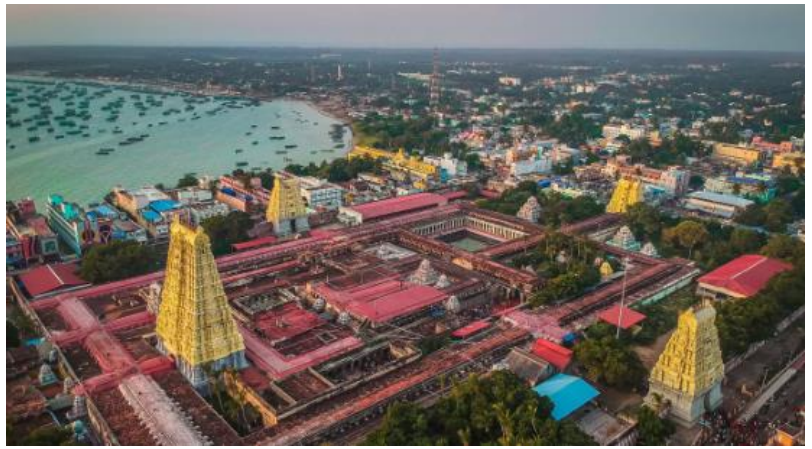

- रामनाथस्वामी मंदिर भारत के तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम द्वीप के पास स्थित भगवान शिव को समर्पित देश के कुल 12 ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है।

- इस मंदिर को रामेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।

- हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर की शिवलिंग की स्थापना भगवान राम ने अपने लंका अभियान के दौरान रामसेतु नामक पुल को पार करने से पहले की थी।

- इस मंदिर का जीर्णोंद्धार 12 वीं शताब्दी में 'पांड्या राजवंश' के दौरान किया गया था।

- द्राविड़ वास्तुकला शैली से बनाया गया यह मंदिर हिंदू धर्म के चार धामों में से एक है।